International Journal of Engineering & Scientific Research
Vol.12 Issue 03, March 2024
ISSN: 2347-6532 Impact Factor: 8.076
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बाल विकास एवं माता–पिता की मनोवृति पर उत्तरदायित्व का प्रभाव–एक अध्ययन

डॉ० विन्दा राम , एच.ओ.डी
मनोविज्ञान विभाग
जीवछ कॉलेज, मोतीपुर , मुजफ्फरपुर

भूमिका

बाल विकास की एक लंबी श्रृंखला होती है इस श्रृंखला में व्यक्तित्व के हर पहलू का क्रमषः निर्माण होता जाता है। शैषवावस्था की किस घटना के चरित्र निर्माण में कौन सा प्रभाव डाला और उससे भावी जीवन की लम्बी यात्रा पथ में कहाँ–कौन सा मोड़ आया यह जानना अत्यंत कठिन है। इस व्यक्तित्व निम्राण के रास्ते में माता–पिता वह प्रथम तत्व होता हैं जिससे षिषु को जीवन का प्रथम अनुभव मिलना शुरू होता है। यह क्रम परिपक्वावस्था तक चलता रहता है। एक कुषल स्वर्णकार एक सुन्दर आभू"ाण निर्माण करता है लेकिन इस निर्मित मनोहारी आभूषण को देख क रवह स्वयं भी यह बता पाने में असमर्थ ही रहेगा कि उसकी उस छोटी सी हथौड़ी की किस चोट के आभूषण को कौन सा रूप दिया था। एक कुषल माता–पिता अपने बच्चों के पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण तो कर सकता है लेकिन इनकी भाषा भी उसी मौन स्वर्णकार की भाषा होती है जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता है।

बाल विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से लेकर आज तक यह महत्व का विषय रहा है। प्राचीन काल में सर्वांगीन विकास हेतु गुरू आश्रम का सहारा लिया जाता था। लेकिन इस आधुनिक युग में प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नषील रहते हैं। बच्चों में जन्म के साथ ही शारीरिक, मानसिक, क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, संवेगात्मक, षिक्षा एवं चरित्र का विकास भी प्रारंभ हो जाता है। जो आगे चलकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के रूप में प्रकट होता है। इन सारे विकासों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माता–पिता की मनोवृति का निष्चित रूप से प्रभाव पड़ता है।

विकास उन प्रगतिषील परिवर्तनों को कहते हैं जो नियमित एवं क्रमिक होता है। बाल्यावस्था जीवन की सबसे अनमोल अवस्था होती है। प्रारम्भिक कारण में बच्चों को किसी भी चीज की जानकारी स्पष्ट रूप से नहीं होती है। चुकि वे माता–पिता पर अपनी हर आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्भर करते हैं। परिवर एक सार्वभौमिक संस्था है जिसमें माता–पिता अपनी सभी सेवाओं, अनुभवों के द्वारा स्नेह के साथ बच्चों का विकास करने का प्रयास करते हैं। बच्चों के लिए जो भी करते हैं वह निःस्वार्थ भाव से करते हैं माता–पिता

का प्रेम और वात्सल्य विकास पर अनुकूल प्रभाव डालता हैं बच्चे माता—पिता की विषेषताओं से प्रभावित होते हैं। माता—पिता एक सुदृढ़ वृक्ष के समान और बच्चे उसके फूल, फल माने जाते हैं। मेकाइवर तथा पेज ने लिखा है—परिवार वह समूह है जो लिंग संबंधी आधार पर परिभाषित किया जाता है और काफी छोटा व इतना स्थायी है कि बच्चों की उत्पति और पालन—पोषण की व्यवस्था करने योग्य है।

जॉन आम्स कोमेनोयस (1560—1670) इन दी ग्रेट डेडीकेटेड ने स्पष्ट विकास की अवस्था को चार भागों में बांटा जिसकी अवधि छः वर्ष एक अवस्था में रेखा, नवजात षिषुकाल, शैषवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था आदि। विलियम जेम्स, मैकमूलर, डेभर, बर्ट आदि मनोवैज्ञानिकों ने वंष परम्परा के क्रम में उसमें पाये जाने वाले व्यवहार की व्यवस्था किया है। जी. स्टेनले हॉल बाल विकास आन्दोलन का प्रारम्भ अमेरिका में किया जिस आधार पर आज इस आन्दोलन के जनक के रूप में जाने जाते हैं। इस संबंध में विभिन्न मनोविज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन महत्वपूर्ण है। पियागैट वेर्ट 1918, हेगलीट 1930, मैकार्थी, हॉल ने बच्चों के विकास पर पड़ने वाले विभिन्न कारकों के प्रभावों का स्पष्ट रूप में उल्लेख किया है। वाटसन 1919 में कहा था कि बच्चा जब पैदा होता है तो वह अपने माथे पर लिख कर नहीं आता कि वह बेइमान है या ईमानदार, धर्मात्मा है या पापी। वह यह सब कुछ इस दुनियां में कदम रखने के बाद अपने परिवार से अपने पड़ोस से, अपने आस—पास के पूरे माहौल से क्रमषः सीखता है और अपने पाप को विकसित करता है। जैसा भी आकार दो वह वही आकार धारण कर लेगा।

हम इसे अच्छा आदर्ष नागरिक भी बना सकते हैं और बुरे से बुरे कर्म करने वाला अपराधी भी। वाटसन के इस चिंतन के बाद से मनोवैज्ञानिकों, समाजषास्त्रियों, गृहवैज्ञानिकों एवं जिज्ञासु माता—पिता का ध्यान बाल पोषण प्रणाली की ओर गया और इसे अधिक से अधिक नियंत्रित और वैज्ञानिक बनाने की दिषा में प्रयास होने लगा। अब सभी मानने लगे हैं कि एक युवा अपनी शैषव स्मृतियों को कभी भूलता नहीं है और ये स्मृतियाँ ही उसक भावी जीवन का पथ निर्धारण करती है इस संदर्भ में अभिभावकत्व प्रणाली को जीवन निर्माण का प्रथम एवं अंतिम सोपान कहा जाए तो अतिषयोक्ति न होगी।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बाल विकास पर माता—पिता के उत्तरदायित्व का किस रूप में प्रभाव पड़ता है इसे देखना है। ग्राफ 1964 ने उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति उसे कहा है जिसके अंदर अपनी एवं सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भरी हुई हो, उसमें अनुचित उचित की परख इतनी अधिक हो कि किसी भी काम को करने के पहले उसमें परिणाम के बारे में उसे पूरा अनुमान हो जाता है। ऐसा व्यक्ति नैनिकता और अनैतिकता के बीच भेद करने की क्षमता रखता है तथा कोई भी अनैतिक कार्य जिससे अपनी या किसी अन्य व्यक्ति की हानि होती हो वह नहीं करता है। इसके विपरीत ऐसे व्यक्ति जिसमें उत्तरदायित्व की भावना कम होती है

अपने भावनाओं में संवेदनषील होते हैं तथा उसनके व्यवहार अनियंत्रित होते हैं वे अपनी निजी स्वार्थ से प्रभावित होकर ही कोई कार्य करते हैं। इनके विचार पूर्वधारणाओं से ग्रसित होते हैं इसलिए इनके विचार स्थिर नहीं रह पाते हैं। इस विष्लेषण से ऐसा लगता है कि एक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति सामाजिक, राष्ट्रीय एवं पारिवारिक समस्याओं के प्रति भी ठोस और जवाबदेही पूर्ण विचार रखता है। साथ ही अपने बच्चों के विकास समुचितरूप में तो रहा है या नहीं इसका ज्यादा ख्याल रखता है।

इस पृष्टभूमि में :–

यह प्राक् कल्पना की जाती है कि निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण माता–पिता की अपेक्षा उच्च उत्तरदायित्व पूर्ण माता–पिता में बाल विकास के प्रति अपेक्षाकृत अनुकूल मनोवृति पायी जायेगी।

क्षेत्र :–

मुजफ्फरपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में माता–पिता पर अध्ययन किया गया।

प्रतिदर्श :–

मुजफ्फरपुर शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र के तीन सौ माता–पिता को अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया।

संयंत्र एवं मापनी :– उत्तरदायित्व मापनी :–

सिन्हा (1976) ने व्यक्तित्व के उत्तरदायी आयाम को मापने के लिए ग्राफ (1964) द्वारा निर्मित कैलिफोर्निया साइकोलोजिकल इन्भेन्ट्री के आर० ई० स्केल का हिन्दी रूपान्तरण किया। यह हिन्दी रूपान्तरण भारतीय प्रतिदर्ष पर व्यक्तित्व के इस आयाम को मापने के लिए एक सफल मापनी सिद्ध हुई। इस मापनी के आधार पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले उच्च उत्तरदायी एवं निम्न अंक प्राप्त करने वाले निम्न उत्तरदायी की श्रेणी में आयेगें। इस मापनी में पदों की कुद संख्या एकतालीस है। अतः अधिकमत प्राप्तांक एकतालीस और न्यूनतक शून्य की संभावना है।

व्यक्ति के उत्तरदायित्व चर के संबंध में इस स्थल पर यह जानना आवष्यक है कि बाल विकास एवं माता–पिता की मनोवृत्ति के वास्तविक जनसंख्या में व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर के वितरण की प्रवृति क्या है ? इस उद्देष्य से मुजफ्फरपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से तीन सौ मता–पिता के प्रतिदर्ष पर उत्तरदायित्व को मापने के लिए ग्राफ 1964 द्वारा निर्मित सी.पी. आई के आर ई स्केल के हिन्दी रूपान्तरण उत्तरदायित्व मापनी (सिन्हा 1976) का चालन किया गया। इस मापनी के आधार पर तीन सौ माता पिता के प्रतिदर्ष पर प्राप्त प्राप्तांकों के प्रसाद तथा वितरण सारिणी संख्या एक में उल्लिखित है :–

सारिणी संख्या एक

मध्यमान	मध्यांक	बहुलांक	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटि
28.25	28.54	28.64	3.84	.22

उत्तरदायित्व प्राप्तांक के वितरण से प्रतिदर्ष के संबंध में केन्द्रीय प्रवृति के संबंध में जो निष्कर्ष प्राप्त होता है उसके आधार पर इसके प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त पर आधारित होने के प्रमाण पुष्ट होते हैं। वितरण का मध्यमान 27.25, मध्यांक 27.54 तथा बहुलांक 27.64 है। इन तीनों ही सांख्यिकीय निष्कर्षों में इतनी अधिक निकटता है कि इस निकटता के आधार पर इस प्रसार के वास्तविक जनसंख्या के प्रसार की सामान्य वितरण प्रवृति को प्रमाणित करता है। प्रसार के मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटि .22 है जिससे .01 विष्वसनीयता के स्तर पर कहा जा सकता है कि वर्तमान प्रतिदर्ष माध्यमान जनसंख्या मध्यमान से इतनी अधिक निकटता है कि इस निकटता के आधार पर इस प्रसार के वास्तविक जनसंख्या के प्रसार की सामान्य वितरण प्रवृति को प्रमाणित करता है। प्रसार के मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटि .22 है जिससे .01 विष्वसनीयता के स्तर पर कहा जा सकता है कि वर्तमान प्रतिदर्ष माध्यमान जनसंख्या मध्यमान से ±.057 की प्रसाद की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकती है। गिलफोर्ड, 1956 इन परिमाणों के आधार पर व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर के संबंध में निम्नलिखित परिमाण प्राप्त हुआ।

(क) माता पिता के प्रतिदर्ष के उत्तरदायित्व प्राप्तांक का वितरण जानसंख्या के प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त के अनुकूल है।

(ख) प्रतिदर्ष का मध्यमान जनसंख्या के मध्यमान का वास्तविक प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

(ग)प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त पर आधारित प्राप्तांकों का यह वितरण प्रमाणित करता है कि समाज में व्यक्तित्व का उत्तरदायित्व चर समान रूप से वितरित नहीं है। समाज में जहाँ एक ओर कुछ लोग (उच्चतक पचीस प्रतिषत) अत्यन्त उत्तरदायी है दूसरी ओर (निम्न पचीस प्रतिषत) अत्यंत अनुत्तरदायी प्रवृति के भी है और इन दोनों ही अतिसीमाओं के बीच जनसंख्या की आधी संख्या पड़ती है।

उत्तरदायित्व, बाल विकास एवं माता–पिता की मनोवृति

उत्तरदायित्व तथा बाल विकास एवं माता पिता की मनोवृति के संबंध में उपर वर्णित प्राक कल्पना में यह अनुमान किया गया था कि निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण माता पिता की अपेक्षा उच्च उत्तरदायित्व पूर्ण माता पिता में बाल विकास के प्रति अनुकूल मनोवृति पायी जायेगी। अध्ययन के अंतर्गत प्रयुक्त तीन सौ माता पिता

के प्रतिदर्ष पर (गफ 1964) के हिन्दी अनुवाद (सिन्हा 1976) का चालन किया गया। पूर्ण प्रतिदर्ष के प्राप्तांकों के आधार पर इनके दो समूह निर्मित हुए–उच्चतम एवं निम्नतम समूह। प्राप्तांक के तृतीय चतुर्थांष से उपर के प्राप्तांकों के उच्चतम समूह तथा प्रथम चतुर्थांषं के नीचे के प्राप्तांकों को निम्नतम समूह कहा गया। उत्तरदायित्व मापनी के आधार पर न्यनतम प्राप्तांक शून्य तथा उच्चतम प्राप्तांक एकतालीस की संभावना है। जिसमें वर्तमान प्रतिदर्ष निम्नतमक प्राप्तांक पन्द्रह तथा उच्चतम प्राप्तांक सैंतीस प्राप्त हुआ है। इस प्रतिदर्ष का प्रथम चतुर्थांषं 24.78 तथा तृतीय चतुर्थांष प्राप्तांक 29.87 है। उच्चतम तथा निम्नतम दोनों ही समूहों में प्रयोज्यों की संख्या क्रमषः 72 एवं 76 है।

उच्चतम उत्तरदायित्व तथा निम्नतम उत्तरदायित्व के दोनों ही समूहों के पृथक–पृथक बाल विकास एवं माता पिता की मनोवृति प्राप्तांकों के वितरण तथा दोनों ही समूहों के मध्यमानों प्रामाणिक विचलनों तथा उनके ही अनुपात का तुलनात्मक विवेचन सारिणी संख्या दो में वर्णित है।

उच्चतम एवं निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण समूहों के माता पिता की मनोवृति एवं बाल विकास का तुलनात्मक अध्ययन :–

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचरण	मध्यमान की प्र0 त्रृटि	मध्यमानों के अंतर की प्र0 त्रृटि	टी. अनुपात	सार्थ0 स्तर
उच्च उत्तरदायित्व पूर्ण समूह	74	35.080	18.30	.91	.95	4.15	.01
निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण समूह	78	31.60	8.15	.21			

उत्तरदायित्व समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह के पृथक–पृथक बाल विकास एवं माता पिता की मनोवृति प्राप्तांकों के उपर वर्णित तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उच्च उत्तरदायित्व पूर्ण समूह का बाल विकास के प्रति माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांकों का मध्यमान 34.80 तथा निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण समूह के माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांकों का मध्यमान 30.60 है। इन दोनों ही समूहों के मनोवृति प्राप्तांकों के मध्मानों का अंतर 4.20 है। मध्यमानों के अंतर की सार्थकता को जानने के लिए टी अनुपात का परिणाम 4.15 है जो .01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। यह निष्कर्ष प्राक कल्पना को सत्यापित करती है।

संपूर्ण प्रतिदर्ष के उत्तरदायित्व प्राप्तांक तथा बाल विकास एवं माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांकों के बीच प्रोडक्ट मोमेन्ट सह संबंध जांच को भी चालित किया गया जिससे इन दोनों ही समूहों को संबंध की जांच हुई। इस जांच के आधार पर दोनों ही चरों के बची .325 सह संबंध गुणांक प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर प्रमाणित होता है। यह सह संबंध गुणांक दोनों ही चरों के बीच धनात्मक एवं घनिष्ठ सह संबंध को प्रदर्षित करता है। (गैरेट 1955, सारिणी से पे 439)

प्राप्त परिणाम के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है :–

(क) निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता की अपेक्षा उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता में बाल विकास के प्रति अधिक अनुकूल मनोवृति पायी जायेगी।

(ख) उत्तरदायित्व या माता–पिता की मनोवृति एवं बाल विकास के बीच सार्थक उच्च, घनिष्ट सह संबंध पाया गया है।

(ग) जनसंख्या में व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर का वितरण समान्य वितरण सिद्धान्त के अनुकूल प्रमाणित होता है।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष :

व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर के संबंध में यह प्राक कल्पना की गई थी कि उच्च उत्तरदायित्व समूह के माता–पिता में बाल विकास के प्रति अनुकूल तथा निम्न में उतना अनुकूल नहीं पायी जायेगी। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह प्राक कल्पना पूर्णतः सत्यापित हुई है। उच्च उत्तरदायित्व समूह का बाल विकास एवं माता पिता की मनोवृति प्राप्तांक मध्यमान 34.80 तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह का बाल विकास एवं माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांक मध्यमान 30.60 है दोनों ही समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमानों का अंतर 4.20 है तथा ही अनुपात 4.15 है जो .01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर के संबंध में गफ (1964) ने यह कहा है कि उत्तरदायित्व पूर्ण व्यक्ति उसे कहते हैं जिसमें नैतिकता की भावना होती है जबावदेही उच्च कोटि की होती है तथा उसमें अपने एवं समाज के बारे में पूर्ण चेतना रही है। इसके विपरीत निम्न उत्तरदायित्व पूर्ण व्यक्ति अपरिपक्व विचार का होता है। उससे संवेगात्मक अस्थिरता रहती है जिसके कारण उसके व्यवहार अनियंत्रित एवं उग्र होते हैं। ऐसा व्यक्ति क्षणिक निराषा या सुख–दुःख से भी तुरंत प्रभावित हो जाता है। व्यक्तित्व की इस विषेषता के आधार पर यह सर्वथा अनुकूल लगता है कि उच्च उत्तरदायित्व गुण के भारा हुआ व्यक्ति अपने जीवन से संबंधित किसी भी सामाजिक समस्या के प्रति एक निष्चित स्थिर एवं ठोस दृष्टिकोण रखता है, क्योंकि वह कभी भी वस्तु स्थिति से अपने को पृथक नहीं कर सकता। सतत् परिवर्तनषील तथा उलक्षनपूर्ण समस्याओं से गुजरते हुए भी वर्तमान परिवेष में एक उत्तरदायी व्यक्ति अपने विचारों को स्थिर रखता है क्योंकि वह ढुलमुल की नीति रख ही नहीं सकता। बाल विकास भी वर्तमान सामाजिक परिवेष में एक जटिल समस्या है। इस संदर्भ में उच्च उत्तरदायित्व पूर्ण माता पिता के समूह का बाल विकास के प्रति अनुकूल मनोवृति पाया जाना उचित ही है।

International Journal of Engineering & Scientific Research
Vol.12 Issue 03, March 2024
ISSN: 2347-6532 Impact Factor: 8.076
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

Reference :

1. Garettee H.E (1955) – **Satisfaction in Psychology and Education** (Fourth Edition) Longman, Green & Co, New York.
2. Guilford. J.P. (1956) – **Fundamental Statistics in Phychology and Deucation** third edition Mc Grow Hill Book Company INC New York.
3. Cooper J.B. (1966) – **Two Scales for Parent Evaluation Journal of Jenetic Phychology,** 108, 49-53.
4. Gough H. G. (1964) – **Mannual of California Psychological Review,** California, Consulting Psychologist Press, Palo Alto.
5. Goode. S. & Hatt P.K. (1952) – **Methods in Socila Research,** New York, Mc. Grow Hill.
6. Sinha K. K (1976) – Attitude Twords Youth Unrest in relation to over own Parental style and some personality variables thesis, Bihar University.
7. Watson J. B. (1919) – Psychology from the standpoint of a Behaviourist Philadelphia – Lippincott co, 1919 (Third Ed. 1929).
8. Smith P.K. Cowrie Hand Blades M. 2007 – Under Standing Childrens Developement Basic Psychology (4th ed) Oxford England.
9. Rai Dr. Dona & Sarita Rai (2019) - A Study on parent – child relationship and their a cademic Achievement of Students studying in class X inter nabonal Journal of Multidisciplinary Education and resench Vt. 10 Issue – 2 (5) February 2021.